ncism
प्राणाभिसरः प्राणायतनानाम्

Prof. Vaidya Rakesh Sharma
प्रो. वैद्य राकेश शर्मा
President, Board of Ethics and Registration
अध्यक्ष, आचार एवं पंजीयन बोर्ड

सत्यमेव जयते

भारत सरकार
भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग
आयुष मंत्रालय, नई दिल्ली

Government of India
National Commission for Indian System of Medicine
Ministry of AYUSH, New Delhi

D.O. No./ NCISM-34/2023
Date:- 27/7/2023

आयुर्वेद एवं नई शिक्षा नीति
वर्तमान स्थिति एवं भविष्य की संभावनाये (स्पष्ट दिशा नई आशा)

आयुर्वेद की शिक्षा का समावेश, समग्रता से वैश्विक स्तर पर परिवर्तन लाने हेतु अनिवार्य हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 द्वारा समस्त लोगों को उच्च गुणवत्तापूर्वक शिक्षा प्राप्त हो सके तथा शिक्षा द्वारा आम जनमानस में राष्ट्र की संस्कृति, न्याय, पर्यावरण एवं राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना जाग्रत हो सके एवं समर्पण मूलक होनी चाहिए। शिक्षा नीति द्वारा देश का प्रत्येक नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक हो, वैश्विक स्तर पर कार्य करने में सक्षम हो।

प्रत्येक शिक्षित जन समग्रता, सर्वांगीण विकास एवं एकात्मक दृष्टि को भारतीय संस्कृति से समझे।

भारत में प्राचीन शिक्षा द्वारा **"सर्वे भवंतु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः"** का वैश्विक विचार है। भारत की प्राचीन शिक्षा का अंतिम लक्ष्य मोक्ष है, **'सा विद्या या विमुक्तये'** चाहे दर्शन हो, आर्ष ग्रंथ हो या अन्य कोई भी भारतीय शिक्षा का ग्रंथ हो। यह शिक्षा का आदान–प्रदान गुरूकुल माध्यम से था। इस शिक्षा को प्राप्त करने के लिए विदेशों के नागरिक तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला जैसे विश्व पटल के संस्थानों में अध्ययन के लिए आते थे।

इसी शिक्षा के अंतर्गत चरक, सुश्रुत, वागभट्, चक्रपाणि, पंतजलि, जेज्जट, नागार्जुन आदि अनेक ऋषि वैज्ञानिक एवं ग्रंथों के रचनाकार हुए। जिन्होंने धर्म, अर्थ काम, मोक्ष के सम्यक योग को आरोग्य का उत्तम मूल बताया है। जैसे कि–

धर्मार्थकाममोक्षाणामारोग्यं मूलमुत्तमम्। (चरक)

यह चार पुरूषार्थ आज भी उतने ही महत्वपूर्ण भाव है।

विद्या वह जो मुक्त करती है उपवृंहण करती है, विनयशील करती है, इसका भावार्थ है शिक्षा विश्व के कल्याण हेतु होती है। शिक्षा द्वारा आत्मनिर्भर, सर्वांगीण विकास, सामाजिक परिवर्तन होगा तो कोई भी शिक्षा नीति उपयोगी सिद्ध होगी।

आयुर्वेद–आयु एवं वेद दो शब्दों का संयोग है जन्म से मृत्यु पर्यन्त निरोगी रहकर या रूग्ण होने पर व्याधि मोक्ष के लिए उपाय बताये जाने वाले ज्ञान का बोध आयुर्वेद से होता है।

यह भारत का प्राचीनतम आरोग्य एवं चिकित्सा प्रदान करने वाला शास्त्र है। आयुर्वेद में सदवृत्त (सदाचार का आचरण) एवं नित्यचर्या का उल्लेख आज भी उतना ही वैज्ञानिक है जितना सहस्र वर्ष पूर्व। इससे स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है जिसे आयुर्वेद द्वारा निम्न प्रकार से उल्लेखित किया है–

समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियः।
प्रसन्नात्मेन्द्रियमनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते ॥ (सुश्रुत)

आज के वैज्ञानिक युग में समय अनुरूप कार्य करने के लिए आयुर्वेद के अध्ययन एवं सिद्धांतों को विद्यार्थियों, अध्यापकों, अनुसंधानकर्ताओं, औषधि निर्माताओं एवं आम जन सामान्य के लिए वर्तमान शिक्षा नीति अनुरूप अपनाना होगा। इसलिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति को ध्यान में रखते हुए आयुर्वेद के नियामको द्वारा आयुर्वेद शिक्षा के न्यूनतम मानक निर्धारित किये है।
जिसमें आयुर्वेद ज्ञान के साथ अन्य विषयों का ज्ञान भी अनिवार्य किया हैं।

Elective System लागू करना। इससे Allied विषयों का ज्ञान प्राप्त कर सकेगें। कोई भी विषय का समग्रज्ञान पाने के लिए इसके साथ अन्य विषयों का भी अध्ययन करना आवश्यक होता है। जैसे कि–

एकं शास्त्रमाधियानो न विघात शास्त्रनिश्चयम्।
तस्मात्बहुश्रुतः शास्त्र विजानियात चिकित्सकः।। (सुश्रुत)

इससे विद्यार्थियों की Inter disciplinary and Multi disciplinary approach इससे विकसित होगी। यह विषय निम्न अनुसार है–

1. Basics of Microbiology.
2. Basics of Pharmacology
3. Basics of Physiotherapy
4. Introduction to Epidemiology
5. Basics of Biomedical Engineering
6. Architecture in ISM
7. Introduction to Vrikshayurveda
8. Basics of Preventive cardiology
9. Basics of Sports Medicine

ऐसे ही नई शिक्षा अंतर्गत LMS (Learning Management System) इसके तहत विद्यार्थी के प्रवेश से लेकर उसके हर क्रम का बोध उस विद्यार्थी, महाविद्यालय, विश्वविद्यालय, चिकित्सा परिषद् एवं आम जन सामान्य को रहेगा।

इसका फायदा यह है कि विद्यार्थी का क्रमः से विकास होगा एवं क्रमानुसार योग्यता प्राप्त कर समाज के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। उपरोक्त नई पद्धतियों द्वारा आयुर्वेदतज्ञ वैश्विक स्तर पर आयुर्वेद को लोगों को समझा सकेंगे। अच्छे अध्यापक, चिकित्सक, अनुसंधानकर्ता एवं औषधि निर्माता तैयार होगें। लोगों में आयुर्वेद के प्रति रूझान होगा।

आयुर्वेद @ 2047:– आजादी का अमृतकाल में स्पष्ट दिशा, नई आशा रखें जाना है।। भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति के साथ तालमेल रखकर नये पाठ्क्रम बना रहा है। जिसके तहत आयुर्वेद के छात्रो के चिकित्सा कौशल को बढ़ाने के लिए नई नीतियाँ बना रहा है।

नैदानिक परिणामों को बेहतर करने के लिए आधुनिक तकनीकी को एकीकृत करके शिक्षा, कौशल एवं अनुसंधान को बढावा दे रहा है।

आयुर्वेद वनौषधी में मिलने वाले पोषक तत्व के ऊपर शोध कार्य के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है।

आयोग ने विभिन्न देशों में आयुर्वेद संस्थानों की स्थापना करना एवं उनकी पद्वीयों को वैश्विक मान्यता के लिए नियम प्रदान करने का लक्ष्य रखा है।

आयुर्वेद के मूलभूत सिद्धांत जैसे प्रकृति परीक्षण को (प्रोटिऑमिक एवं जीनोमिक्स) स्तर पर एकीकृत अनुसंधान निदान उपकरणों के आधार पर बढ़ावा देना।

आयुर्वेद पर आधारित भविष्य सूचक एवं निवारक व्यक्तित्व चिकित्सा की स्थापना होगी।

भारतीय चिकित्सा पद्धति का प्रत्येक चिकित्सक रोगों के नैदानिक एवं चिकित्सा पक्ष में रोगी की चिकित्सा करने में सक्षम बने। यह आचार एवं पंजीयन बोर्ड का लक्ष्य है।

आदरणीय प्रधानमंत्री जी, का मंत्र जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान, जय अनुसंधान इसी के ऊपर आयुर्वेद विज्ञान को नई दिशा देने के लिए भारतीय चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय आयोग अखंड प्रयत्न कर रहा है।

"इति"

प्रो.(वैद्य) राकेश शर्मा
अध्यक्ष, आचार एवं पंजीयन बोर्ड,
एनसीआईएसएम, नई दिल्ली